سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ

अनकरीब बेवकूफ लोग कहेंगे के किस चीज़ ने उन को फेर दिया

عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِيْ كَانُوْا عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ

उन के उस क़िबले से जिस पर वो थे। आप फरमा दीजिए के अल्लाह ही के लिए मशरिक़

وَ الْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۴۲﴾

और मगरिब है। अल्लाह सीधे रास्ते की तरफ हिदायत देते हैं जिसे चाहते हैं।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ

और इसी तरह हम ने तुम्हें दरमियानी उम्मत बनाया ताके तुम इन्सानों पर

عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ

गवाह रहो और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम पर गवाह रहें।

وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِيْ كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ

और हम ने नहीं बनाया उस क़िबले को जिस पर आप थे मगर इस लिए ताके हम मालूम करें के कौन

يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ؕ

रसूल के पीछे चलता है (और कौन) उन में से अपनी एड़ियों के बल पलट जाते हैं।

وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ وَمَا كَانَ

और यक़ीनन ये क़िबला बड़ी भारी चीज़ थी मगर उन पर जिन को अल्लाह ने हिदायत दी। और अल्लाह

اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۳﴾

ऐसा नहीं के तुम्हारी नमाज़ को ज़ायेअ करे। यक़ीनन अल्लाह इन्सानों पर शफक़त वाले, निहायत रहम वाले हैं।

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِى السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ

यक़ीनन आप के चेहरे के बार बार आसमान की तरफ उठने को हम देख रहे हैं। फिर हम ज़रूर आप को

قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۪ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ

फेर देंगे उस क़िबले की तरफ जिस को आप पसन्द करते हैं। इस लिए आप अपना रुख मस्जिदे हराम की तरफ कर लीजिए।

وَ حَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ

और जहां भी तुम हो तो तुम अपना रूख मस्जिदे हराम की तरफ फेर लो।

وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ

और यक़ीनन वो लोग जिन को किताब दी गई वो यक़ीन रखते हैं के ये हक़ है उन के

رَّبِّهِمْ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٤﴾ وَلَئِنْ اَتَيْتَ

रब की तरफ से। और अल्लाह बेखबर नहीं है उन आमाल से जो वो कर रहे हैं। और अगर आप ले आएं

الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ۚ

उन के पास जिन को किताब दी गई तमाम मोअजिज़ात भी, तब भी वो आप के क़िबले का इत्तिबा नहीं करेंगे

وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَ مَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ

और न आप उन के क़िबले का इत्तिबा करने वाले हैं। और न उन में से एक दूसरे के क़िबले का इत्तिबा

بَعْضٍ ۗ وَ لَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ

करने वाला है। और अगर आप उन की ख्वाहिशात के पीछे चले इस के बाद के आप के पास

مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٥﴾ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ وقف لازم

इल्म आ गया तो यक़ीनन आप क़ुसूरवारों में से हो जाएंगे। वो लोग जिन को हम ने

الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۗ

किताब दी वो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पेहचानते हैं जैसा के अपने बेटों को पेहचानते हैं।

وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَ هُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤٦﴾ وقف منزل

और यक़ीनन उन में से एक जमाअत हक़ को छुपाती है इस हाल में के वो जानती भी है।

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١٤٧﴾ ع ١٧ ١

ये हक़ है आप के रब की तरफ से, इस लिए आप शक करने वालों में से न हों।

وَ لِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۛ وَقْفُ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

और हर एक के लिए एक जिहत है जिस की तरफ वो मुंह करने वाला है, इस लिए तुम खैर के कामों में सबक़त करो।

اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ

तुम जहां भी होगे, अल्लाह तुम्हें इकट्ठा ले आएगा। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर

شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٤٨﴾ وَ مِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ

कुदरत वाले हैं। और जहां से भी तुम निकलो तो मस्जिदे हराम की

شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَ اِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ۗ

तरफ अपना रूख कर लो। और यक़ीनन ये हक़ है आप के रब की तरफ से।

وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٩﴾ وَ مِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ

और अल्लाह बेखबर नहीं है उन कामों से जो तुम करते हो। और जहां से भी आप निकलें

فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَ حَيْثُ مَا كُنْتُمْ

तो अपना रूख मस्जिदे हराम की तरफ फेर लीजिए। और तुम जहां भी हो

فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ

तो अपना रूख मस्जिदे हराम की तरफ कर लिया करो, ताके उन लोगों के लिए तुम पर

عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۗ فَلَا تَخْشَوْهُمْ

कोई हुज्जत बाक़ी न रहे मगर वो लोग जो उन में से ज़ालिम हैं। तो आप उन से न डरें,

وَ اخْشَوْنِيْ ۗ وَ لِاُتِمَّ نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَ لَعَلَّكُمْ

बल्के मुझ से डरें। और इस लिए ताके मैं तुम पर अपनी नेअमत पूरी कर दूँ और ताके तुम

تَهْتَدُوْنَ ۝١٥٠ ۛ كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا

हिदायत याफ्ता बन जाओ। जैसा के हम ने तुम में एक रसूल भेजा तुम ही में से जो तुम पर तिलावत

عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَ يُزَكِّيْكُمْ وَ يُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ

करते हैं हमारी आयतें और तुम्हारा तज़किया करते हैं और तुम्हें किताब व हिकमत की तालीम

وَ الْحِكْمَةَ وَ يُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ۝١٥١ ۛ

देते हैं और तुम्हें सिखाते हैं वो जो तुम जानते नहीं थे।

فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَ اشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ۝١٥٢ ع

इस लिए तुम मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद करूंगा और तुम मेरा शुक्र अदा करो और तुम मेरी नाशुक्री मत करो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ ؕ

ऐ ईमान वालो! तुम मदद तलब करो सब्र और नमाज़ के ज़रिए।

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝١٥٣ وَ لَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ

यक़ीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ हैं। और तुम उन लोगों के मुतअल्लिक़ जो अल्लाह के रास्ते में क़त्ल

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ۝١٥٤

किए जाएं, उन्हें मुर्दे मत कहो, बल्के वो ज़िन्दा हैं, लेकिन तुम्हें उस का एहसास नहीं।

وَ لَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَ الْجُوْعِ وَ نَقْصٍ

और हम ज़रूर तुम्हें आज़माएंगे किसी क़द्र खौफ और भूक और मालों और

مِّنَ الْاَمْوَالِ وَ الْاَنْفُسِ وَ الثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ۝١٥٥ ۙ

जानों और फलों की कमी के ज़रिए। और आप बशारत सुना दीजिए उन सब्र करने वालों को।

معانقة ٣ عند المتأخرين ١٢

ركوع ٤

الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّآ اِلَيْهِ

के जब उन्हें मुसीबत पहोंचती है, तो केहते हैं اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ (हम भी अल्लाह के ममलूक हैं

رٰجِعُوْنَ ﴿١٥٦﴾ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ

और हम उसी की तरफ लौट कर जाने वाले हैं)। उन पर उन के रब की तरफ से रहमतें हैं

وَ رَحْمَةٌ ۣ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ﴿١٥٧﴾ اِنَّ الصَّفَا وَ الْمَرْوَةَ

और खुसूसी रहमत है। और यही लोग हिदायतयाफ्ता हैं। यक़ीनन सफा और मरवा

مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ اَوِ اعْتَمَرَ

अल्लाह के (दीन की) यादगारों में से हैं। फिर जो शख्स बैतुल्लाह का हज करे या उमरा करे तो

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ اَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا ۭ وَ مَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۙ

उस पर कोई गुनाह नहीं के वो उन दोनों का तवाफ करे। और जो किसी भलाई को खुशी से करे तो यक़ीनन

فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيْمٌ ﴿١٥٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ

अल्लाह कदरदान, जानने वाले हैं। यक़ीनन जो लोग छुपाते हैं उन

مَآ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَ الْهُدٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ

वाज़ेह आयात को और हिदायत को जिस को हम ने उतारा इस के बाद के हम ने उस को साफ साफ बयान किया

لِلنَّاسِ فِى الْكِتٰبِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَ يَلْعَنُهُمُ

किताब में इन्सानों के लिए, तो उन पर अल्लाह की लानत है और उन पर लानत करने वाले भी लानत

اللّٰعِنُوْنَ ﴿١٥٩﴾ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَ اَصْلَحُوْا وَ بَيَّنُوْا

करते हैं। मगर वो लोग जिन्हों ने तौबा की और इस्लाह की और साफ साफ

فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَ اَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٠﴾

बयान किया, उन की तौबा मैं क़बूल करूंगा। और मैं तौबा क़बूल करने वाला, निहायत रहम वाला हूँ।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ

यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया और वो मर गए इस हाल में के वो काफिर थे, तो उन पर

لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَ النَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٦١﴾ ۙ خٰلِدِيْنَ

अल्लाह की लानत और फरिश्तों और तमाम इन्सानों की लानत है। वो उस में हमेशा

فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿١٦٢﴾

रहेंगे। उन से अज़ाब हल्का नहीं किया जाएगा और उन को मोहलत नहीं दी जाएगी।

وَ اِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ
और तुम्हारा माबूद यकता माबूद है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। वो बड़ा महरबान,

١٩ ع ١١ ٣ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٣﴾ اِنَّ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ
निहायत रहम वाला है। यक़ीनन आसमानों और ज़मीन के पैदा करने

وَ اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَ النَّهَارِ وَ الْفُلْكِ الَّتِىْ تَجْرِىْ
और रात और दिन के आने जाने में और उस कश्ती में जो चलती है

فِى الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ
समन्दर में उन चीज़ों को ले कर जो इन्सानों को नफा देती है और उस पानी में जिस को अल्लाह ने

مِنَ السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا
आसमान से उतारा, फिर उस के ज़रिए ज़मीन को उस के खुश्क़ हो जाने के बाद ज़िन्दा किया

وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۪ وَّ تَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ
और हर क़िस्म के जानवर उस में फैला दिए, और हवाओं के उलट फेर में

وَ السَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ
और उस बादल में जो मुअल्लक़ है आसमान और ज़मीन के दरमियान, अलबत्ता निशानियाँ हैं

لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿١٦٤﴾ وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ
ऐसी क़ौम के लिए जो अक़्ल रखती है। और कुछ लोग वो हैं जो अल्लाह को छोड़ कर

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا
कई माबूद बनाते हैं, उन से वो महब्बत करते हैं अल्लाह की महब्बत की तरह। और जो ईमान वाले हैं

اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اِذْ يَرَوْنَ
वो अल्लाह से ज़्यादा महब्बत रखने वाले हैं। और काश के ये ज़ालिम सोचते जब वो अज़ाब

الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّ اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ
देखेंगे के कुव्वत सारी की सारी अल्लाह ही के लिए है। और ये के अल्लाह सख्त अज़ाब

الْعَذَابِ ﴿١٦٥﴾ اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا
देने वाले हैं। जब बराअत करेंगे वो लोग जिन का इत्तिबा किया गया उन से जिन्हों ने इत्तिबा किया

وَ رَاَوُا الْعَذَابَ وَ تَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾ وَقَالَ
और वो अज़ाब देखेंगे और उन से असबाब मुनक़तेअ हो जाएंगे। और वो लोग कहेंगे

الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ

जो मुत्तबिअ थे के अगर हमारे लिए (ज़मीन में) दोबारा लौट कर जाना हो, तो हम उन से बराअत करेंगे जैसा

كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ

के उन्हों ने हम से बराअत की। इस तरह अल्लाह उन के आमाल उन पर हसरत बना कर

عَلَيْهِمْ ؕ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ ع ٢٠

दिखाएंगे। और वो दोज़ख से निकलने वाले नहीं हैं। ऐ इन्सानो!

كُلُوْا مِمَّا فِى الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّ لَا تَتَّبِعُوْا

तुम खाओ उन चीज़ों में से जो ज़मीन में हैं हलाल पाकीज़ा को। और तुम शैतान के

خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٦٨﴾

क़दम ब क़दम मत चलो। यक़ीनन वो तुम्हारा खुला दुश्मन है।

اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَ الْفَحْشَآءِ وَ اَنْ تَقُوْلُوْا

वो तो सिर्फ तुम्हें बुराई और बेहयाई का हुक्म देता है और इस का के तुम अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦٩﴾ وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا

कहो वो जो तुम जानते नहीं हो। और जब उन से कहा जाता है के तुम उस के पीछे चलो

مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ

जिस को अल्लाह ने उतारा तो वो केहते हैं बल्के हम तो उस के पीछे चलेंगे जिस पर हम ने अपने

اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْــًٔا

बाप दादा को पाया। क्या अगरचे उन के बाप दादा कुछ भी अक़्ल नहीं रखते थे

وَّ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿١٧٠﴾ وَ مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِىْ

और हिदायतयाफ्ता नहीं थे? और काफिरों का हाल उस शख्स के हाल की तरह है जो

يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّ نِدَآءً ؕ صُمٌّۢ

आवाज़ देता है ऐसी चीज़ को जो सुन नहीं सकती सिवाए बुलाने और पुकारने के। वो बेहरे हैं,

بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٧١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

गूंगे हैं, अन्धे हैं, फिर वो अक़्ल भी नहीं रखते। ऐ ईमान

اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَ اشْكُرُوْا

वालो! तुम खाओ उन उम्दा चीज़ों में से जो हम ने तुम्हें दी हैं और तुम अल्लाह के

لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١٧٢﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ
शुक्रगुज़ार रहो अगर तुम उसी की इबादत करते हो। अल्लाह ने तो तुम पर हराम किया है

الْمَيْتَةَ وَ الدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ
मुर्दार और खून और खिन्ज़ीर का गोश्त और वो जानवर जिस पर गैरूल्लाह का नाम लिया

اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَآ اِثْمَ
गया हो। फिर जो शख्स मजबूर हो जाए इस हाल में के वो लज़्ज़त को तलब करने वाला न हो और जान बचाने की मिक़्दार से

عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٧٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ
ज़्यादा खाने वाला न हो, तो उस पर कोई गुनाह नहीं है। यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। यक़ीनन जो लोग

مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَ يَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا
छुपाते हैं उस किताब को जो अल्लाह ने उतारी और उस के बदले में थोड़ी सी क़ीमत

قَلِيْلًا ۙ اُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِىْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا النَّارَ
लेते हैं, तो ये लोग अपने पेट में आग के सिवा नहीं भर रहे हैं

وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۖۚ
और अल्लाह उन से कलाम नहीं करेगा क़यामत के दिन और उन का तज़किया नहीं करेगा।

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٤﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ
और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा। यही लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले ज़लालत

بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ اَصْبَرَهُمْ
खरीदी और मग़फिरत के बदले अज़ाब खरीदा। फिर वो लोग आग पर कितना सब्र

عَلَى النَّارِ ﴿١٧٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ؕ
करने वाले हैं? ये इस वजह से के अल्लाह ने किताब हक़ के साथ उतारी। और यक़ीनन

ع ٢١ ٥ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِى الْكِتٰبِ لَفِىْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ﴿١٧٦﴾ ع
जो लोग किताब में इख्तिलाफ कर रहे हैं, अलबत्ता वो दूर की मुखालफत (लम्बे झगड़े) में हैं।

لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ
नेकी सिर्फ ये नहीं है के तुम अपना रूख फेर लो मशरिक़ की तरफ

وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
और मगरिब की तरफ, लेकिन नेक वो शख्स है जो ईमान रखे अल्लाह पर और आखिरी दिन

وَ الْمَلٰٓئِکَةِ وَ الْکِتٰبِ وَ النَّبِیّٖنَ ۚ وَ اٰتَی الْمَالَ

और फरिश्तों और किताबों और अम्बिया पर। और माल दे

عَلٰی حُبِّهٖ ذَوِی الْقُرْبٰی وَ الْیَتٰمٰی وَ الْمَسٰکِیْنَ وَ ابْنَ

माल की महब्बत के बावजूद रिश्तेदारों को और यतीमों और मिस्कीनों और

السَّبِیْلِ ۙ وَ السَّآئِلِیْنَ وَ فِی الرِّقَابِ ۚ وَ اَقَامَ الصَّلٰوةَ

मुसाफिरों को और सवाल करने वालों को और गर्दनों के छुड़ाने में, और नमाज़ क़ाइम करे

وَ اٰتَی الزَّکٰوةَ ۚ وَ الْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ

और ज़कात दे, और जो अपना अहद पूरा करने वाले हैं जब वो अहद करें,

وَ الصّٰبِرِیْنَ فِی الْبَاْسَآءِ وَ الضَّرَّآءِ وَ حِیْنَ الْبَاْسِ ؕ

और जो सब्र करने वाले हैं सख्ती और तकलीफ में और लड़ाई के वक़्त।

اُولٰٓئِکَ الَّذِیْنَ صَدَقُوْا ؕ وَ اُولٰٓئِکَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿۱۷۷﴾

यही लोग सच्चे हैं। और यही लोग मुत्तक़ी हैं।

یٰٓاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا کُتِبَ عَلَیْکُمُ الْقِصَاصُ

ऐ ईमान वालो! तुम पर क़िसास फर्ज़ किया गया मक़्तूलीन के बारे

فِی الْقَتْلٰی ؕ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَ الْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَ الْاُنْثٰی

में के आज़ाद क़त्ल किया जाए आज़ाद के बदले और गुलाम क़त्ल किया जाए गुलाम के बदले और औरत क़त्ल

بِالْاُنْثٰی ؕ فَمَنْ عُفِیَ لَهٗ مِنْ اَخِیْهِ شَیْءٌ فَاتِّبَاعٌۢ

की जाए औरत के बदले। फिर जिस शख्स को उस के भाई की तरफ से मुआफी हो जाए, तो माकूल तरीक़े पर

بِالْمَعْرُوْفِ وَ اَدَآءٌ اِلَیْهِ بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِکَ تَخْفِیْفٌ

मुतालबा करना है और उस की तरफ भलाई के साथ अदा कर देना है। ये तुम्हारे रब की तरफ से

مِّنْ رَّبِّکُمْ وَ رَحْمَةٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰی بَعْدَ ذٰلِکَ

आसानी है और रहमत है। लेकिन उस के बाद जो ज़्यादती करेगा

فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۱۷۸﴾ وَ لَکُمْ فِی الْقِصَاصِ حَیٰوةٌ

तो उस के लिए दर्दनाक अज़ाब है। और तुम्हारे लिए ऐ अक़्ल वालो! क़िसास में

یّٰٓاُولِی الْاَلْبَابِ لَعَلَّکُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۹﴾ کُتِبَ عَلَیْکُمْ اِذَا

ज़िन्दगी है ताके तुम (क़त्ल करने से) परहेज़ करो। तुम पर फर्ज़ किया गया जब

حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرَا ۚۖ اِۨلْوَصِيَّةُ

तुम में से किसी एक की मौत का वक़्त क़रीब आ जाए अगर उस ने माल छोड़ा हो, (तो फ़र्ज़ किया गया)

لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا

वसीय्यत करना वालिदैन और रिश्तेदारों के लिए माकूल तरीक़े पर। ये मुत्तक़ियों पर

عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ۝١٨٠ؕ فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَاۤ

लाज़िम है। फिर उस को जो बदल देगा उस को सुनने के बाद तो

اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝١٨١ؕ

उस का गुनाह सिर्फ उन लोगों पर है जो उस को बदलेंगे। यक़ीनन अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं।

فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا فَاَصْلَحَ

फिर जो वसीय्यत करने वाले की तरफ से खौफ करे एक तरफ माइल होने का या गुनाह का, फिर वो उन के

بَيْنَهُمْ فَلَاۤ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٨٢ع ٢٢ ع

दरमियान सुलह करा दे तो उस पर कोई गुनाह नहीं है। यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ

ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए

كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝١٨٣ۙ

जैसा के उन लोगों पर फ़र्ज़ किए गए जो तुम से पेहले थे, ताके तुम मुत्तक़ी बनो।

اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا

चन्द गिने चुने दिनों के (रोज़े फ़र्ज़ किए गए)। फिर तुम में से जो बीमार हो

اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيْنَ

या सफर पर हो तो दूसरे दिनों से तादाद को पूरा करना है। और उन लोगों पर जो रोज़े

يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا

की ताक़त रखते हैं, एक मिस्कीन का खाना फिदया देना है (ये हुक्म मन्सूख है)। फिर जो खुशी से नेकी करे

فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ؕ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

तो वो उस के लिए बेहतर है। और ये के तुम रोज़ा रखो ये तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम

تَعْلَمُوْنَ ۝١٨٤ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْۤ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ

जानते हो। रमज़ान का महीना वो महीना है जिस में कुरआन उतारा गया, जो इन्सानों के लिए

| |
|---|
| هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَ الْفُرْقَانِ ۚ |
| हिदायत है और हिदायत की साफ साफ आयात और हक़ व बातिल के दरमियान फैसला करने वाली साफ साफ आयतें हैं। |
| فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ؕ وَمَنْ كَانَ |
| फिर तुम में से जो ये महीना पाए तो उस को चाहिए के उस के रोज़े रखे। और जो बीमार |
| مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ يُرِيْدُ |
| हो या सफर पर हो तो दूसरे दिनों से तादाद को पूरा करना है। अल्लाह तुम्हारे |
| اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ز وَ لِتُكْمِلُوا |
| साथ आसानी का इरादा फरमाते हैं और अल्लाह तुम्हारे साथ तंगी का इरादा नहीं फरमाते। और इस लिए |
| الْعِدَّةَ وَ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَ لَعَلَّكُمْ |
| ताके तुम तादाद को पूरा करो और ताके तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो इस पर के अल्लाह ने तुम्हें हिदायत दी और |
| تَشْكُرُوْنَ ﴿١٨٥﴾ وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ ؕ |
| ताके तुम शुक्रगुज़ार बनो। और जब आप से मेरे बन्दे सवाल करें मेरे मुतअल्लिक़, तो मैं क़रीब ही हूँ। |
| اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ |
| मैं पुकारने वाले की पुकार क़बूल करता हूँ जब वो मुझे पुकारता है। इस लिए उन्हें चाहिए के वो मेरे हुक्म |
| وَ لْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ﴿١٨٦﴾ اُحِلَّ لَكُمْ |
| को क़बूल करें और मुझ पर ही ईमान लाएं ताके वो राह पाएं। तुम्हारे लिए अपनी |
| لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآئِكُمْ ؕ هُنَّ لِبَاسٌ |
| बीवियों से जिमाअ रोज़ों की रात में हलाल किया गया। वो तुम्हारा लिबास |
| لَّكُمْ وَ اَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ |
| हैं और तुम उन का लिबास हो। अल्लाह जानते हैं के तुम अपने नफ्सों से |
| تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَ عَفَا عَنْكُمْ ۚ |
| खयानत करते थे, इस लिए अल्लाह ते तुम्हारी तौबा क़बूल फरमाई और तुम्हें मुआफ कर दिया। |
| فَالْئٰنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ص |
| इस लिए अब तुम उन से मुबाशरत करो और तुम तलब करो वो (औलाद) जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है। |
| وَ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ |
| और तुम खाओ और पियो यहां तक के तुम्हारे लिए सफेद धागा |

مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۪ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ

सियाह धागे से सुबह (सादिक़) अलग नज़र आ जाए। फिर रात तक रोज़ों को

اِلَى الَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوْهُنَّ وَ اَنْتُمْ عٰكِفُوْنَ ۙ

पूरा करो। और तुम उन से जिमाअ मत करो इस हाल में के तुम मस्जिदों में

فِى الْمَسٰجِدِ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا ؕ كَذٰلِكَ

मोअतकिफ हों। ये अल्लाह की हुदूद हैं। तुम उन के क़रीब भी मत जाओ। इसी तरह

يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿١٨٧﴾ وَلَا تَاْكُلُوْٓا

अल्लाह अपनी आयतें खोल खोल कर बयान करते हैं लोगों के लिए ताके वो मुत्तक़ी बनें। और अपने माल

اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَ تُدْلُوْا بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ

आपस में बातिल तरीक़े से मत खाओ और तुम उन को हुक्काम तक मत ले जाओ

لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَ اَنْتُمْ

ताके तुम लोगों के मालों का एक हिस्सा गुनाह के ज़रिए खा जाओ, इस हाल में के तुम

٢٣ ع ٧ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٨﴾ ع يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ؕ قُلْ هِىَ

जानते हो। ये लोग आप से चाँदों के मुतअल्लिक़ सवाल करते हैं। आप फरमा दीजिए के चाँद

مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ؕ وَ لَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا

इन्सानों के लिए औक़ात मालूम करने और हज का वक़्त मालूम करने का ज़रिया है। और नेकी ये नहीं है के

الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ وَاْتُوا

तुम घरों में आओ उन की पुश्त की जानिब से, लेकिन नेक वो शख्स है जो अल्लाह से डरे। और

الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٨٩﴾

घरों में उन के दरवाज़ों से आओ। और अल्लाह से डरो ताके तुम फलाह पाओ।

وَ قَاتِلُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ

और अल्लाह के रास्ते में क़िताल करो उन लोगों से जो तुम से क़िताल करें

وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿١٩٠﴾ وَاقْتُلُوْهُمْ

और तुम ज़्यादती मत करो। यक़ीनन अल्लाह ज़्यादती करने वालों से महब्बत नहीं करते। और उन को क़त्ल करो

حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَ اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ

जहाँ उन को पाओ और उन को निकालो जहाँ से उन्हों ने तुम्हें निकाला

وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ

और फितना ये क़त्ल से भी ज़्यादा सख्त चीज़ है। और उन से क़िताल मत करो

عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ

मस्जिदे हराम के पास जब तक के वो तुम से मस्जिदे हराम में क़िताल न करें। फिर अगर वो तुम से क़िताल करें

فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩١﴾ فَاِنِ انْتَهَوْا

तो तुम उन को क़त्ल कर दो। इसी तरह काफिरों की सज़ा है। फिर अगर वो बाज़ आ जाएं

فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٩٢﴾ وَ قٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ

तो यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। और उन से क़िताल करो यहां तक के फितना बाक़ी

فِتْنَةٌ وَّ يَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ؕ فَاِنِ انْتَهَوْا

न रहे और दीन अल्लाह ही का हो जाए। फिर अगर वो बाज़ आ जाएं

فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩٣﴾ اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ

तो सिवाए ज़ालिमों के किसी पर ज़्यादती नहीं है। ये हुरमत वाला महीना उस हुरमत वाले

الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ

महीने के बदले में है और दूसरी मोहतरम चीज़ों का भी बदला है। फिर जो तुम पर ज़्यादती करे

فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۪

तो तुम उस पर ज़्यादती करो उसी जैसी जो उस ने तुम पर ज़्यादती की है।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩٤﴾

और अल्लाह से डरो और जान लो के अल्लाह मुत्तक़ियों के साथ है।

وَ اَنْفِقُوْا فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ

और अल्लाह के रास्ते में खर्च करो और खुद अपने को हलाकत में

اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛۚ وَ اَحْسِنُوْا ۛۚ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٩٥﴾ مع

मत डालो। और तुम नेकी करो। यक़ीनन अल्लाह नेकी करने वालों से महब्बत फरमाते हैं। عند المتقدمين ١٢

وَ اَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ

और हज और उमरा अल्लाह के लिए पूरा करो। फिर अगर तुम्हें घेर लिया जाए

فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى

तो जो हदी मुयस्सर हो (वो दो)। और अपने सरों को मत मुंडाओ यहां तक के

يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا

हदी अपने हलाल होने की जगह पहोंच जाए। फिर जो तुम में से बीमार हो

اَوْ بِهٖۤ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ

या उस के सर में तकलीफ हो तो रोज़ों से या सदक़े से या जानवर ज़बह कर के

اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَاۤ اَمِنْتُمْ ۟ وقفة فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ

फिदया देना है। फिर जब तुम मामून हो जाओ, तो फिर जो शख़्स हज के साथ उमरा

اِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ

को मिला कर फायदा उठाए, तो जो हदी मुयस्सर हो (वो दे)। फिर जो शख़्स

لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِى الْحَجِّ وَ سَبْعَةٍ

हदी न पाए तो तीन दिन के रोज़े रखने हैं हज में और सात रोज़े रखने हैं

اِذَا رَجَعْتُمْ ؕ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ

जब तुम वापस लौटो (जब तुम फारिग़ हो जाओ)। ये पूरे दस दिन हैं। ये उस शख़्स के लिए है

اَهْلُهٗ حَاضِرِى الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ

जिस के घर वाले मस्जिदे हराम के पास मौजूद न हों। और अल्लाह से डरो

ع ٢٤ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝١٩٦ ع اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ

और जान लो के यक़ीनन अल्लाह सख्त सज़ा देने वाले हैं। हज के महीने

مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ

मालूम हैं। फिर जो उन में हज फ़र्ज कर ले तो फिर न जिमाअ पर उभारने वाली गुफतगू और न

وَلَا فُسُوْقَ ۙ وَلَا جِدَالَ فِى الْحَجِّ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا

गुनाह की बात करनी है और न हज में झगड़ा करना है। और जो भलाई तुम

مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَ تَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۫

करो तो अल्लाह उसे जानते हैं। और तोशा तय्यार कर लो, फिर बेशक बेहतरीन तोशा तक़वा है।

وَاتَّقُوْنِ يٰۤاُولِى الْاَلْبَابِ ۝١٩٧ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ

और मुझ से डरो, ऐ अक़्ल वालो! तुम पर कोई गुनाह नहीं है

اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ فَاِذَاۤ اَفَضْتُمْ

के तुम अपने रब का फ़ज़्ल तलब करो। फिर जब अरफात

وقف النبي صلى الله عليه وسلم

مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۪

से वापस लौटो तो अल्लाह को मशअरे हराम के पास (मुज़दलिफा में) याद करो।

وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ

और अल्लाह को याद करो जैसा के उस ने तुम्हें हिदायत दी। और यक़ीनन तुम उस से पेहले

لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿١٩٨﴾ ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ

अलबत्ता गुमराहों में से थे। फिर तुम लौटो जहां से सब लोग वापस लौटते हैं

وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٩٩﴾

और अल्लाह से मग़फिरत तलब करो। यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ

फिर जब तुम अपने हज के अरकान पूरे कर चुको, तो अल्लाह को याद करो अपने याद करने की तरह

اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ؕ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ

अपने बाप दादा को या उस से भी ज़्यादा याद करो। फिर कुछ लोग वो हैं जो

يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ

यूँ केहते हैं के ऐ हमारे रब! तू हमें दुन्या ही में दे दे और उन के लिए आखिरत में

مِنْ خَلَاقٍ ﴿٢٠٠﴾ وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا

कोई हिस्सा नहीं है। और उन में से कुछ लोग वो हैं जो यूं केहते हैं के ऐ हमारे रब! तू हमें

فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ

दुन्या में भी भलाई अता फरमा और आखिरत में भी भलाई अता फरमा और तू हमें दोज़ख के अज़ाब से

النَّارِ ﴿٢٠١﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ النصف

बचा ले। यही लोग हैं जिन के लिए उन के किए का हिस्सा है।

وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٢٠٢﴾ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ اَيَّامٍ

और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाले हैं। और अल्लाह को चन्द गिने चुने दिनों में

مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ

याद करो। फिर जो दो दिन में जल्दी (मक्का) वापस आ जाए तो उस पर कोई गुनाह

عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ؕ

नहीं है। और जो उस के बाद भी रहे तो उस पर भी कोई गुनाह नहीं है, ये उन के लिए है जो मुत्तक़ी हैं।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٠٣﴾

और अल्लाह से डरो और जान लो के तुम उस की तरफ इकट्ठे किए जाओगे।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ

और लोगों में ऐसा शख्स भी है के जिस का कलाम आप को अच्छा लगता है दुन्यवी ज़िन्दगी के

الدُّنْيَا وَ يُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ

बारे में और वो अल्लाह को गवाह बनाता है उस पर जो उस के दिल में है। हालांके वो सख्त

الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾ وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ

झगड़ालू है। और जब वो वापस लौटता है तो ज़मीन में कोशिश करता है ताके उस में फसाद

فِيْهَا وَ يُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ

फेलाए और वो खेती और जानवरों को बरबाद करता है। और अल्लाह को फसाद पसन्द

الْفَسَادَ ﴿٢٠٥﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ

नहीं। और जब उस से कहा जाता है के अल्लाह से डर, तो उसे बड़ाई

بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَ لَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٢٠٦﴾

गुनाह पर उभारती है, फिर उस के लिए जहन्नम काफी है। और वो बुरा ठिकाना है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ

और कुछ लोग वो हैं जो अल्लाह की रज़ा की तलब में अपनी जान दे देते हैं।

وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ ۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا

और अल्लाह बन्दों पर महरबान है। ऐ ईमान वालो! तुम इस्लाम

فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۠ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ

में पूरे पूरे दाखिल हो जाओ। और तुम शैतान के क़दम ब क़दम मत चलो।

اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٠٨﴾ فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

यक़ीनन वो तुम्हारा खुला दुशमन है। फिर अगर तुम फिसल जाओ इस के बाद के

مَا جَآءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٠٩﴾

तुम्हारे पास वाज़ेह आयतें आ चुकीं तो जान लो के अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظُلَلٍ مِّنَ

वो मुन्तज़िर नहीं हैं मगर इस बात के के उन के पास अल्लाह आ जाए बादलों के सायबानों

الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَ قُضِيَ الْاَمْرُ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ
में और फरिश्ते आ जाएं और मुआमला खत्म कर दिया जाए। और अल्लाह ही की तरफ

تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٢١٠﴾ سَلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ ع ٢٥ ١٠
तमाम उमूर लौटाए जाएंगे। आप बनी इस्राईल से सवाल कीजिए के हम ने उन्हें कितनी

مِّنْ اٰيَةٍۭ بَيِّنَةٍ ؕ وَ مَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ
रोशन निशानियाँ अता कीं। और जो अल्लाह की नेअमत को बदलेगा इस

مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢١١﴾
के बाद के वो उस के पास आई तो यक़ीनन अल्लाह सख्त सज़ा देने वाले हैं।

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَ يَسْخَرُوْنَ
काफिरों के लिए दुन्यवी ज़िन्दगी मुज़य्यन की गई और वो ईमान

مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ وقف لازم
वालों से मज़ाक़ करते हैं। और जो मुत्तक़ी हैं वो क़यामत के दिन उन के ऊपर

الْقِيٰمَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٢﴾
रहेंगे। और अल्लाह बेहिसाब रोज़ी देते हैं जिसे चाहते हैं।

كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۫ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ
तमाम इन्सान एक ही उम्मत थे। फिर अल्लाह ने अम्बिया भेजे

مُبَشِّرِيْنَ وَ مُنْذِرِيْنَ ۪ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ
बशारत देने वाले और डराने वाले। और उन के साथ किताब उतारी

بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ
हक़ के साथ ताके वो इन्सानों के दरमियान फैसला करे जिस में वो इख्तिलाफ कर रहे हैं।

وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ
और उस में इखतिलाफ नहीं किया मगर उन लोगों ने जिन को किताब दी गई थी इस के बाद के

مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ
उन के पास रोशन मोअजिज़ात आए, आपस की ज़िद की वजह से। फिर अल्लाह ने

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ
अपने हुक्म से हिदायत दी ईमान वालों को उस हक़ की जिस में वो इखतिलाफ कर रहे थे।

وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢١٣﴾

और अल्लाह सीधे रास्ते की तरफ हिदायत देते हैं जिसे चाहते हैं।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ

क्या तुम ने ये गुमान कर रखा है के तुम जन्नत में दाखिल हो जाओगे हालांके तुम पर अब तक उन लोगों जैसे

الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ

हालात नहीं आए जो तुम से पेहले गुज़र चुके। जिन को सख्ती और

وَ الضَّرَّآءُ وَ زُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ

तकलीफ पहोंची और वो हिला दिए गए यहां तक के केह उठे रसूल और वो लोग जो उन के साथ

اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ ﴿٢١٤﴾

ईमान लाए थे के अल्लाह की नुसरत कब आएगी? सुनो! यक़ीनन अल्लाह की नुसरत क़रीब है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ

वो सवाल करते हैं के क्या खर्च करें? आप फरमा दीजिए के जो माल तुम खर्च करो

فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ

वो वालिदैन, और रिश्तेदारों, और यतीमों और मिस्कीनों

وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ

और मुसाफिर के लिए होना चाहिए। और जो भलाई तुम करोगे तो यक़ीनन अल्लाह

بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢١٥﴾ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ

उसे जानते हैं। तुम पर क़िताल फर्ज़ किया गया हालांके ये तुम्हें नापसन्द है।

وَ عَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ

और शायद किसी चीज़ को तुम नापसन्द करो, हालांके वो तुम्हारे लिए बेहतर हो।

وَ عَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ

और शायद तुम किसी चीज़ से महब्बत करो, हालांके वो तुम्हारे लिए बुरी हो। और अल्लाह

يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢١٦﴾ ع يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ ع ٢٦

जानते हैं और तुम जानते नहीं हो। ये आप से सवाल करते हैं हुरमत वाले महीने

الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ؕ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ؕ وَصَدٌّ

के मुतअल्लिक़, उस में क़िताल के मुतअल्लिक़। आप फरमा दीजिए के उस में क़िताल करना बहोत बड़ा गुनाह है। लेकिन

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ كُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ٭

अल्लाह के रास्ते से रोकना और अल्लाह के साथ कुफ्र करना और मस्जिदे हराम से रोकना

وَ اِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ

और वहाँ वालों को वहाँ से निकालना, ये अल्लाह के नज़दीक़ उस से भी बड़ा गुनाह है। और फितना

اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ؕ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ

क़त्ल से भी बड़ा गुनाह है। और वो लोग तुम से बराबर क़िताल करते रहेंगे

حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ؕ وَمَنْ

यहां तक के तुम्हें तुम्हारे दीन से मुर्तद बना दें अगर वो उस की ताक़त रखें। और जो

يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ

तुम में से अपने दीन से मुर्तद हो जाएगा, फिर वो मरेगा इस हाल में के वो काफिर है

فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ

तो उन के आमाल ज़ायेअ हो जाएंगे दुन्या और आखिरत में।

وَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۱۷﴾

और ये दोज़खी होंगे। वो उस में हमेशा रहेंगे।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا

यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए और जिन्हों ने हिजरत की और जिहाद किया

فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ

अल्लाह के रास्ते में, ये अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार हैं। और अल्लाह

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۱۸﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ؕ قُلْ

बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। ये आप से सवाल करते हैं शराब और जुए के मुतअल्लिक़। आप फरमा

فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۫ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ

दीजिए के इन दोनों में बड़ा गुनाह है, और लोगों के लिए कुछ मनाफेअ भी हैं। और उन का गुनाह उन के नफे से

مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۬ قُلِ

ज़्यादा बड़ा है। और ये आप से सवाल करते हैं के क्या खर्च करें? आप फरमा दीजिए

الْعَفْوَ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ

के ज़ाइद को खर्च करो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें साफ साफ बयान करते हैं ताके तुम

تَتَفَكَّرُوْنَ ۝٢١٩ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۭ وَ يَسْــَٔـلُوْنَكَ

दुन्या और आखिरत में सोचो। और ये आप से सवाल करते हैं

عَنِ الْيَتٰمٰى ۭ قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۭ وَاِنْ تُخَالِطُوْھُمْ

यतीमों के मुतअल्लिक़। आप फरमा दीजिए के उन की इस्लाह करना बेहतर है। और अगर उन का खर्च अपने साथ तुम मिला लो

فَاِخْوَانُكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۭ

तो वो तुम्हारे भाई हैं। और अल्लाह जानता है माल बरबाद करने वाले को इस्लाह करने वाले से।

وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝٢٢٠

और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें मशक्क़त में डालता। यक़ीनन अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ۭ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ

और मुश्रिक औरतों से तुम निकाह मत करो जब तक के वो ईमान न ले आएं। और अलबत्ता ईमान वाली बाँदी

خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا

मुशरिक औरत से बेहतर है, अगर्चे वो तुम्हें अच्छी लगे। और मुशरिक मर्दों से निकाह

الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ۭ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ

मत करो जब तक के वो ईमान न ले आएं। और अलबत्ता मोमिन गुलाम बेहतर है

مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ۭ اُولٰۗىِٕكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ښ

मुशरिक मर्द से अगर्चे वो तुम्हें अच्छा लगे। ये लोग दोज़ख की तरफ दावत देते हैं।

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ

और अल्लाह दावत देते हैं जन्नत की तरफ और अपने हुक्म से मग़फिरत की तरफ।

ع ٢٧ وَ يُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝٢٢١ ع

और अल्लाह अपनी आयतें इन्सानों के लिए साफ साफ बयान करते हैं ताके वो नसीहत हासिल करें।

وَ يَسْــَٔـلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ۭ قُلْ ھُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا

और वो आप से सवाल करते हैं हैज़ के मुतअल्लिक़। आप फरमा दीजिए के ये गन्दी चीज़ है, इस लिए औरतों से हैज़

النِّسَاۗءَ فِي الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْھُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ

की हालत में अलग रहो। और उन के क़रीब मत जाओ यहां तक के वो पाक हो जाएं।

فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْھُنَّ مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ۭ

फिर जब वो पाक हो जाएं तो उन औरतों के पास आओ उस जगह से जहां से अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है।

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَ يُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿٢٢٢﴾

यक़ीनन अल्लाह तौबा करने वालों से महब्बत फरमाते हैं और पाक रेहने वालों से महब्बत फरमाते हैं।

نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ

तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेती हैं। तो अपनी खेती में आओ जिस तरीक़े से तुम चाहो।

وَ قَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ

और अपने लिए आगे की तदबीर करो। और अल्लाह से डरो और जान लो के अल्लाह से

مُّلٰقُوْهُ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٢٣﴾ وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً

मिलने वाले हो। और आप ईमान वालों को बशारत सुना दीजिए। और अल्लाह को अपनी क़स्मों का निशाना

لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَ تَتَّقُوْا وَ تُصْلِحُوْا بَيْنَ

मत बनाओ के तुम नेकी नहीं करोगे और परहेज़गारी नहीं करोगे और लोगों के दरमियान सुलह

النَّاسِ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٤﴾ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ

न कराओगे। और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। अल्लाह मुआख़ज़ा नहीं करेंगे

بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ

तुम्हारी क़स्मों में से लग्व क़सम पर। लेकिन अल्लाह तुम्हारा मुआख़ज़ा करेंगे उस पर जिस का तुम्हारे दिलों ने पुख़्ता

قُلُوْبُكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٢٥﴾ لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ

इरादा किया हो। और अल्लाह बख्शने वाले, हिल्म वाले हैं। उन लोगों के लिए जो क़सम खा लेते हैं

مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ فَاِنْ فَآءُوْ

अपनी बीवियों के पास जाने से चार महीने इन्तिज़ार करना है। फिर अगर वो रूजूअ कर लें

فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢٦﴾ وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ

तो यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। और अगर वो तलाक़ का पुख़्ता इरादा कर लें

فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٧﴾ وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ

तो यक़ीनन अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। और तलाक़ दी हुई औरतें अपनी ज़ात के बारे में

بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ

तीन हैज़ तक इन्तिज़ार करें। और उन औरतों के लिए हलाल नहीं है

اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ

के वो छुपाएं उस को जो अल्लाह ने उन के रहम में पैदा किया अगर वो

يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَ بُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ
अल्लाह पर और आखिरी दिन पर ईमान रखती हों। और उन के शौहर हक़दार हैं

بِرَدِّهِنَّ فِىْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ؕ وَلَهُنَّ
उन के लौटाने के उस मुद्दत में अगर वो इस्लाह का इरादा करें। और उन औरतों के लिए

مِثْلُ الَّذِىْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۪ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ
भी हक़ है उसी जैसा जो उन औरतों के ज़िम्मे हक़ है उर्फ के मुताबिक़। लेकिन मर्दों के लिए उन औरतों

٢٨ ع ١٢ دَرَجَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٨﴾ اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪
पर एक दर्जा (ज़्यादा हक़) है। और अल्लाह ज़बर्दस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। तलाक़ दो मर्तबा (दी जा सकती)

فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ
है। उस के बाद या तो क़ाइदे के मुताबिक़ रोक लेना है या फिर अच्छी तरह छोड़ देना है। और तुम्हारे

لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـًٔا اِلَّآ
लिए हलाल नहीं है के कुछ भी ले लो उस महर में से जो तुम ने उन को दिया हो, मगर

اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ خِفْتُمْ
ये के वो दोनों डरें इस से के वो अल्लाह की हुदूद को क़ाइम नहीं रख सकेंगे। फिर अगर तुम डरो

اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا
के वो दोनों अल्लाह की हुदूद को क़ाइम नहीं रख सकेंगे तो उन दोनों पर कोई गुनाह नहीं है

فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ
इस में के औरत फिदया दे कर सुलह कर ले। ये अल्लाह की हुदूद हैं, तो उन से आगे मत बढ़ो।

وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٢٩﴾
और जो अल्लाह की हुदूद से आगे बढ़ेगा तो यही लोग ज़ालिम हैं।

فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ
फिर अगर मर्द बीवी को (तीसरी) तलाक़ दे दे, तो फिर वो औरत मर्द के लिए हलाल नहीं है उस के बाद यहां तक के वो औरत

زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ
उस के अलावा किसी दूसरे शौहर से निकाह कर ले। फिर अगर वो दूसरा शौहर भी उसे तलाक़ दे दे, तो फिर उन दोनों पर कोई गुनाह

اَنْ يَّتَرَاجَعَآ اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ
नहीं है इस में के वो आपस में दोबारा निकाह कर लें अगर वो गुमान रखते हों के वो दोनों अल्लाह की हुदूद को क़ाइम रख सकेंगे।

حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٠﴾ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ

और ये अल्लाह की हुदूद हैं, जिन को अल्लाह बयान करते हैं ऐसी क़ौम के लिए जो जानती है। और जब तुम औरतों को

النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ

तलाक़ दो, फिर वो अपनी इद्दत की इन्तिहा (के क़रीब) पहोंच जाएं तो उन्हें रोक लो उर्फ के मुताबिक़

اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۠ وَّلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا

या उन्हें छोड़ दो उर्फ के मुताबिक़। और उन को मत रोके रखो ज़रर पहोंचाने के लिए

لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ

ताके तुम ज़्यादती करो। और जो ऐसा करेगा तो यक़ीनन उस ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया।

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ۫ وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ

और अल्लाह की आयतों को मज़ाक़ मत बनाओ। और याद करो अल्लाह की उस नेअमत को

اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ

जो तुम पर है और उस किताब और हिक्मत को जो उस

وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا

ने तुम पर उतारी, इस की अल्लाह तुम्हें नसीहत करते हैं। और अल्लाह से डरो और जान लो

اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٣١﴾ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ الثلثة ع ۲۹ ۱۳ ۳

के अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं। और जब तुम औरतों को तलाक़ दो,

فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ

फिर वो अपनी इद्दत की इन्तिहा को पहोंच जाएं तो उन को मत रोको इस से के वो अपने शौहरों से

اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ ذٰلِكَ

निकाह करें जब वो आपस में राज़ी हों उर्फ के मुताबिक़। इसी की

يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ

नसीहत की जाती है उस शख़्स को जो तुम में से अल्लाह पर और आखिरी दिन पर ईमान रखता

الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ

है। ये तुम्हारे लिए ज़्यादा पाकीज़गी वाला है और ज़्यादा साफ सुथरा है। और अल्लाह जानता है और तुम

لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٢﴾ وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ

नहीं जानते। और माएं अपनी औलाद को दूध पिलाएं

حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ

पूरे दो साल, उस के लिए जो रज़ाअत की मुद्दत पूरी करना चाहे।

وَ عَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَ كِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ

और बाप (शौहर) के ज़िम्मे दूध पिलाने वाली औरतों को खाना और कपड़ा देना है उर्फ के मुताबिक़।

لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌۢ

किसी शख़्स को तकलीफ नहीं दी जाएगी, मगर उस की वुसअत के मुताबिक़। किसी माँ को ज़रर नहीं पहोंचाया जाएगा

بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۚ وَ عَلَى الْوَارِثِ

उस के बच्चे की वजह से और किसी बाप को ज़रर नहीं पहोंचाया जाएगा उस के बच्चे की वजह से। और वारिस के ज़िम्मे

مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا

भी उसी के मानिन्द है। फिर अगर माँ बाप दोनों इरादा करें दूध छुड़ाने का आपस की रज़ामन्दी से

وَ تَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ؕ وَاِنْ اَرَدْتُّمْ

और आपस के मशवरे से तो उन पर कोई गुनाह नहीं है। और अगर चाहो

اَنْ تَسْتَرْضِعُوْٓا اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ

के तुम दूध पिलवाओ अपने बच्चों को, तो तुम पर कोई गुनाह नहीं है जब तुम दो

مَّآ اٰتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا

वो माल जो तुम देते हो उर्फ के मुताबिक़। और अल्लाह से डरो और जान लो

اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٣﴾ وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ

के अल्लाह तुम्हारे आमाल को देख रहे हैं। और जो तुम में से वफात

مِنْكُمْ وَ يَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ

पा जाएं और बीवियां छोड़ जाएं तो वो अपने बारे में इन्तिज़ार करें

اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ

चार महीने और दस दिन। फिर जब वो अपनी इद्दत की इन्तिहा को पहोंच जाएं

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ

तो तुम पर कोई गुनाह नहीं है उस में जो वो अपने बारे में करें

بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٣٤﴾ وَلَا

उर्फ के मुताबिक़। और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है। और

جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ

तुम पर कोई गुनाह नहीं है उस में जिस को तुम इशारे से बयान करो औरतों की मंगनी के मुतअल्लिक़

اَوْ اَكْنَنْتُمْ فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ

या तुम अपने दिलों में छुपाओ। अल्लाह जानता है के तुम उन औरतों का तज़किरा करोगे

وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا

लेकिन तुम उन से चुपके चुपके वादा मत कर लो, मगर ये के कोई अच्छी बात

مَّعْرُوْفًا ؕ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى يَبْلُغَ

कहो। और निकाह का बन्धन मज़बूत मत बांध लो यहां तक के लिखी हुई मुद्दत

الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ

अपनी इन्तिहा को पहोंच जाए। और जान लो के अल्लाह जानता है उस को जो तुम्हारे दिलों में है,

فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٣٥﴾ ع ٣٠

तो तुम उस से डरो। और जान लो के अल्लाह बख़्शने वाले, हिल्म वाले हैं।

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ

तुम पर कोई गुनाह नहीं है के अगर तुम ने औरतों को तलाक़ दी हो जब तुम ने उन को छुवा न हो,

اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۖۚ وَّمَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ

और तुम ने उन के लिए महर मुकर्रर न किया हो। और उन को एक जोड़ा दो, वुसअत वाले के ज़िम्मे उस की

قَدَرُهٗ وَ عَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًا ۢ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ

इस्तिताअत के बक़दर है और तंगदस्त के ज़िम्मे उस की इस्तिताअत के बक़दर है। ये जोड़ा देना है उर्फ के मुताबिक़।

حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٣٦﴾ وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ

ये लाज़िम है नेकी करने वालों पर। और अगर तुम औरतों को तलाक़ दो इस से पेहले के

قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ

तुम उन को छुओ इस हाल में के तुम ने उन के लिए महर मुक़र्रर

فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا

किया हो, तो उस महर का आधा देना है जो तुम ने मुक़र्रर किया है, मगर ये के वो औरतें मुआफ कर दें या वो शख़्स (वली)

الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ؕ وَاَنْ تَعْفُوْٓا

मुआफ कर दे जिस के हाथ में निकाह का बन्धन है। और ये के तुम मुआफ कर दो

اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ؕ وَ لَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ؕ
ये तक़वा के ज़्यादा क़रीब है। और तुम आपस में एहसान करना मत भूलो।

اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٧﴾ حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ
यक़ीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहे हैं। तमाम नमाज़ों की हिफाज़त करो,

وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۚ وَ قُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ﴿٢٣٨﴾
खास तौर पर दरमियानी नमाज़ की। और अल्लाह के सामने खुशूअ के साथ खड़े हो जाओ।

فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ
फिर अगर तुम खौफ की हालत में हो तो (फिर नमाज़ पढ़ो) खड़े खड़े या सवारी पर। फिर जब तुम मामून हो जाओ

فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٩﴾
तो अल्लाह को याद करो जैसा के उस ने तुम्हें इल्म दिया उस चीज़ का जो तुम जानते नहीं थे।

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۖۚ
और वो लोग जो तुम में से वफात पा जाएं और बीवियां छोड़ जाएं,

وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ
तो अपनी बीवियों के लिए वसीय्यत करना है खर्च देने की एक साल तक इस हाल में के (उन को मकान से)

اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ
निकाला न जाए। फिर अगर वो खुद ही शौहर के मकान से निकल जाएं, तो तुम पर कोई गुनाह नहीं उस में

مَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ
जो वो अपनी ज़ात के बारे में करें उर्फ में से। और अल्लाह ज़बर्दस्त हैं,

حَكِيْمٌ ﴿٢٤٠﴾ وَ لِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌ ۢ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ حَقًّا
हिक्मत वाले हैं। और तलाक़ दी हुई औरतों के लिए फाइदा पहोंचाना है उर्फ के मुताबिक़। ये

عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٤١﴾ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ
मुत्तक़ियों पर लाज़िम है। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें साफ साफ बयान करते हैं

٣١ ع ١٥ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٤٢﴾ ۧ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا
ताके तुम अक़लमन्द बन जाओ। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों की तरफ जो अपने

مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ۪
घरों से निकले इस हाल में के वो हज़ारों थे, (वो निकले) मौत के डर से।

فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ۟ ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

फिर अल्लाह ने उन से फरमाया के तुम सब मर जाओ। फिर अल्लाह ने उन सब को ज़िन्दा फरमा दिया। यक़ीनन अल्लाह

لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

इन्सानों पर एहसान वाले हैं, लेकिन अकसर लोग

لَا يَشْكُرُوْنَ ۝۲۴۳ وَ قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا

शुक्र अदा नहीं करते। और क़िताल करो अल्लाह के रास्ते में और जान लो

اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝۲۴۴ مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ

के अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे

قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ؕ

अच्छा क़र्ज़, फिर अल्लाह उस के लिए उस को कई गुना बढ़ाए।

وَ اللّٰهُ يَقْبِضُ وَ يَبْصُۜطُ ۪ وَ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝۲۴۵

और अल्लाह तंगी करते हैं और वुस्अत करते हैं। और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ

क्या आप ने देखा नहीं बनी इस्राईल की जमाअत की तरफ मूसा (अलैहिस्सलाम) के बाद

مُوْسٰى ۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ وقف لازم

जब के उन्हों ने कहा अपने नबी से के आप हमारे लिए किसी को बादशाह बना कर हमारे साथ भेजिए ताके हम अल्लाह

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ

के रास्ते में क़िताल करें। तो नबी ने फरमाया अगर तुम पर क़िताल फर्ज़ किया जाए

عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ؕ قَالُوْا وَمَا لَنَآ

तो ये हो सकता है के तुम क़िताल न करो? तो उन्हों ने कहा के हमें क्या हुआ के हम

اَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ قَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا

क़िताल न करें अल्लाह के रास्ते में हालांके हमें अपने घरों से और अपने बेटों से

وَ اَبْنَآئِنَا ؕ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا

निकाल दिया गया है। फिर जब उन पर क़िताल फर्ज़ किया गया तो मुकर गए

اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝۲۴۶

मगर उन में से थोड़े। और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानते हैं।

وَ قَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ

और उन लोगों से उन के नबी ने फरमाया के यक़ीनन अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को बादशाह बना कर भेजा है।

مَلِكًا ؕ قَالُوْٓا اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَ نَحْنُ

उन्हों ने कहा के उस के लिए हम पर बादशाहत कैसे हो सकती है, हालांके हम उस की

اَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ؕ

बनिस्बत बादशाहत के ज़्यादा हक़दार हैं और उस को तो माल की वुस्अत भी नहीं दी गई।

قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهٗ بَسْطَةً

नबी ने फरमाया के यक़ीनन अल्लाह ने उस को तुम पर मुन्तखब फरमाया है और उस के लिए इल्म और

فِى الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤْتِىْ مُلْكَهٗ مَنْ

जसामत में ज़्यादा वुस्अत दी है। और अल्लाह अपनी सलतनत देते हैं जिसे

يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٧﴾ وَ قَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ

चाहते हैं। और अल्लाह वुस्अत वाले, इल्म वाले हैं। और उन से उन के नबी ने फरमाया

اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖٓ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ

के यक़ीनन उस के बादशाह होने की निशानी ये है के तुम्हारे पास वो सन्दूक़ आ जाएगा जिस में

سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ بَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى

तुम्हारे रब की तरफ से तसकीन की चीज़ है और उन तबर्रुकात का बक़ीय्या है जिस को आले मूसा

وَاٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ

और आले हारून ने छोड़ा, उस को फरिश्ते उठा कर लाएंगे। यक़ीनन उस में

ع لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٤٨﴾ فَلَمَّا فَصَلَ

निशानी है तुम्हारे लिए अगर तुम ईमान लाते हो। फिर जब तालूत लशकरों को

طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِيْكُمْ

ले कर चले तो तालूत ने कहा के यक़ीनन अल्लाह तुम्हारा एक नहर के ज़रिए इम्तिहान लेने

بِنَهَرٍ ۚ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّىْ ۚ وَمَنْ

वाले हैं। फिर जो उस नहर में से पिएगा, तो वो मुझ से नहीं है। और जो

لَّمْ يَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّىْٓ اِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً

उस को चखेगा भी नहीं तो यक़ीनन वो मुझ से है, मगर वो जो अपने हाथ से चुल्लू

بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ

उठा ले। फिर उन सब ने पिया नहर में से मगर उन में से थोड़े लोगों ने।

فَلَمَّا جَاوَزَهٗ هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ

फिर जब उस नहर को पार कर लिया तालूत ने और उन लोगों ने जो आप के साथ ईमान लाए थे, तो वो केहने लगे के आज

لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ

हमें जालूत और उस के लशकर से लड़ने की ताक़त नहीं है। तो उन लोगों ने कहा जो यक़ीन रखते थे के

اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ

हमें अल्लाह से मिलना है के बहोत सी छोटी जमाअतें बड़ी

فِئَةً كَثِيْرَةًۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٢٤٩﴾

जमाअत पर अल्लाह के हुक्म से ग़ालिब आ गई हैं। और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ हैं।

وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَآ اَفْرِغْ

और जब वो जालूत और उस के लशकर के मुक़ाबले के लिए निकले तो दुआ करने लगे के ऐ हमारे रब! तू हम पर सब्र

عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا

उंडेल दे और हमारे क़दम जमा दे और तू हमारी नुस्रत फरमा

عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٥٠﴾ؕ فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۙ۫

काफिर क़ौम के खिलाफ। फिर उन्हों ने उन को अल्लाह के हुक्म से शिकस्त दी।

وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ

और दावूद (अलैहिस्सलाम) ने जालूत को क़त्ल किया और अल्लाह ने दावूद (अलैहिस्सलाम) को सलतनत और हिक्मत

وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ

दी और उन्हें इल्म दिया उन चीज़ों का जो अल्लाह ने चाहा। और अगर अल्लाह का इन्सानों में से एक को

النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ ۙ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ

दूसरे के ज़रिए दफा करना न होता तो ज़मीन खराब हो जाती,

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٥١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ

लेकिन अल्लाह तमाम जहान वालों पर फ़ज़्ल वाले हैं। ये अल्लाह की आयतें हैं जिन को

نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢٥٢﴾

हम आप पर हक़ के साथ तिलावत करते हैं। और यक़ीनन आप भेजे हुए पैगम्बरों में से हैं।